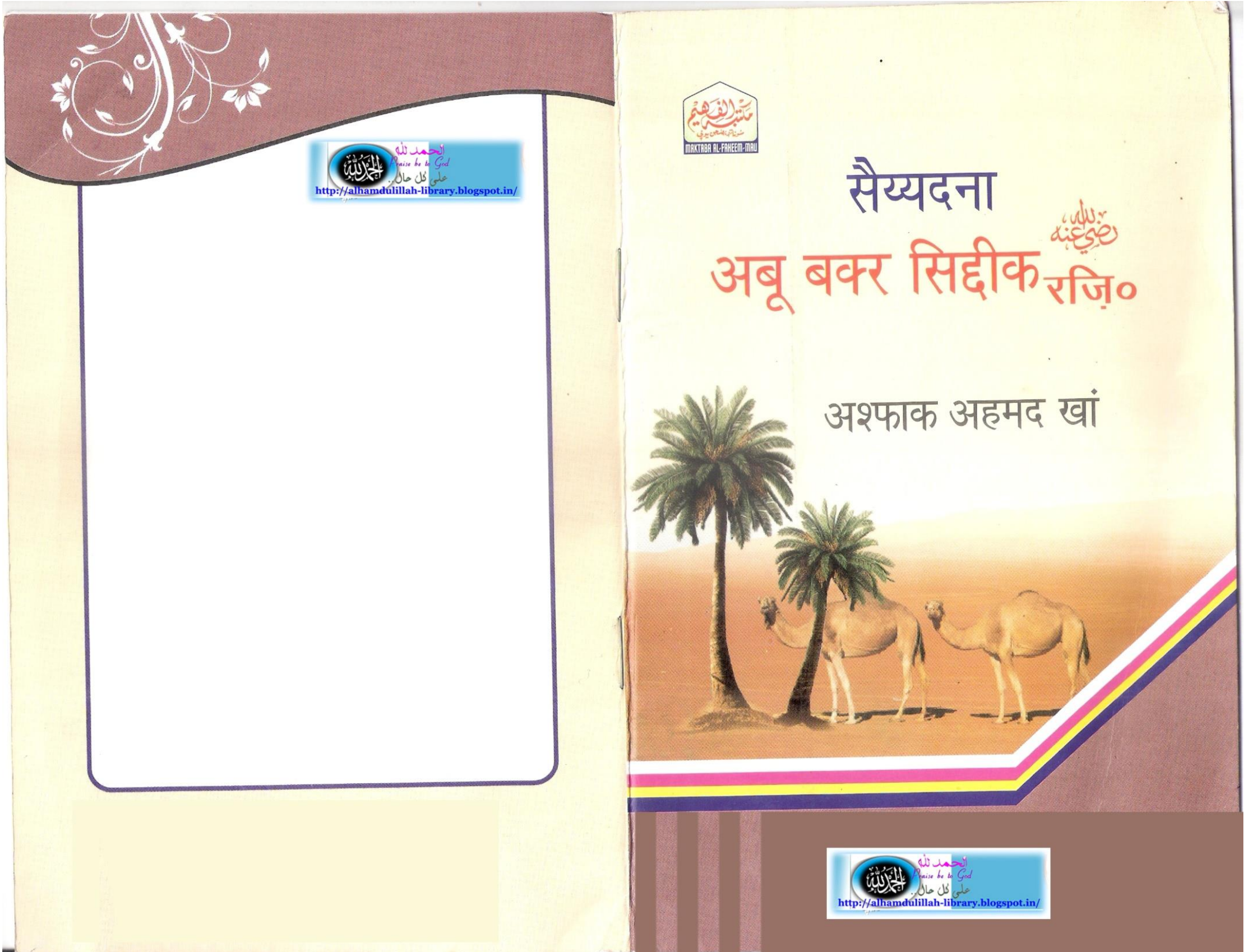


الحمد لله
Praise be to God
على كل حال
http://alhamdulillah-library.blogspot.in/
مكتبة الفهيم
MAKTABA AL-FAHEEM-MAU
सैय्यदना
अबू बकर सिद्दीक रज़ि०
رضي الله عنه
अश्फाक अहमद खां
الحمد لله
Praise be to God
على كل حال
http://alhamdulillah-library.blogspot.in/

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रात का घटा टूप अंधेरा अपने इख़्तिताम को पहुंच चुका था। सूरज की किरनें आहिस्ता आहिस्ता मशरिक़ से उभर रही थीं। हर तरफ़ फैला सुकून और खामूशी देख कर अंदाज़ा होता था कि शायद इससे ज़्यादा पुर अमन ईलाक़ा और कोई नहीं। सहरा और बे आब व गयाह ज़मीन पर फैले पहाड़ अजीब मंज़र पेश कर रहे थे।

लेकिन ये सुकून बस चन्द लम्हो ही का मेहमान था। कुछ लोग एक जगह जमा थे। उनके चेहरो पर इस्तेहज़ा यानी किसी की हंसी उड़ाने की कैफियत मचल रही थी। उनकी आंखों में अनगिनत सवाल, शक के वजूद में लिपटे लहरा रहे थे। उनकी पेशानियों की तिमतिमाहट बता रही थी कि बहुत जल्द उन्हें कोई बड़ी कामयाबी हासिल होने वाली है। ऐसी कामयाबी, जिसका उन्हें अर्से से इन्तेज़ार था, उनकी आपस की चः मीगोईयां बुलन्द होने लगीं।

“कुछ सुना तुमने?

“नहीं तो.....क्या कोई खास बात है?”

“खास ही तो है.......बड़ा दावा था उन्हें हक का पैगाम फैलाने का”

“हां........ वह यही तो कर रहे हैं”

“उसका मतलब है तुमने उनका झूठ का पैगाम अभी तक नहीं सुना?”

“झूठ का पैगाम....झूठ ....और उनके मुंह से?” हैरत की शिकनें सबके चेहरों पर फैल गई।

“हां हां ..... झूठ नहीं तो और क्या है..... भला ये कैसे हो सकता है?”

“आखिर हुआ क्या है?”

“उन्होंने आज एक इतना बड़ा दावा किया है कि जिसे मानना सूरज को झूठलाने के मुतरादिफ है।”

“अच्छा....क्या वाकई?”

“हां ...... वह कहते हैं कि वह रात के किसी हिस्से में मस्जिदे अक्सा गए थे और अब सुबह हमें वह उस सैर का माजरा बयान कर रहे हैं।”

“ये तो वाकई समझ में न आने वाली चीज़ है। फिर क्या हुआ।”

“कुछ नहीं भला यह भी कोई मानने वाली बात है, किसी का दिल व दिमाग भी इस बात की सच्चाई को तसलीम नहीं कर रहा।”

“तो चलो..... आज फिर एक और तमाशा देखें” उनके एक सरदार ने कहा।

"तमाशा.....? कहां?" लोगों ने सवाल किया।

"अरे! उसी इब्ने अबी कहाफा रजि० के पास..... जो उनकी हर बात को सच मान कर उनका साथ दिए जा रहा है।"

"आहा! तो फिर उन्हें झुठलाने का इससे बेहतर मौका और कोई नहीं होगा।" उनमें से एक ने खुशी से चिल्ला कर कहा।

वह लोग इकट्ठा होकर इब्ने अबी कहाफा रजि० के पास पहुंचे। उनके चेहरों पर नाचती कमींगी को इब्ने अबी कहाफा रजि० ने भांप लिया वह होशयार हो गए, वैसे उन्हें अभी तक उसकी कुछ खबर नहीं थी कि उनके बेहतरीन रकीब और दोस्त अपनी रात की सैर का क्या हाल कह चुके हैं।

इब्ने अबी कहाफा! एक बड़ा सरदार बोला "तुमने कुछ सुना अपने साहब के बारे में।"

"क्यों क्या हुआ?"

"आपके साहब कहते हैं कि वह रातों रात बैतुल मुकद्दस गए, वहां से सातों आसमानों पर गए और वापस भी आए हैं।" इस सरदार ने मज़ाक उड़ाने के अन्दाज़ में कहा।

"क्या वाकई उन्होंने यह फरमाया है?"

इब्ने अबी कहाफा रजि० इश्तेयाक भरी आवाज़ में बोले।

"हां...... बिल्कुल...... ये सब उन्होंने कहा है।"

"अगर उन्होंने ये बातें कही हैं तो उनके सच होने में मुझे ज़र्रा

बराबर भी शक नहीं क्योंकि सच के सिवा उनकी ज़बाने मुबारक पर कोई बात नहीं आती।"

लोगों ने कहा "क्या आप उनकी तसदीक करते हैं कि वह रात के वक्त बैतुल मुकद्दस गए, वहां से सातों आसमानों पर गए और सुबह होने से पहले वापस भी आ गये।"

उन्होंने कहा "हां, मैं तो उससे दूर की खबरों की भी तसदीक़ करता हूं।"

ये तसदीक करने वाले कौन थे? ये तो आप जान ही गये होंगे। ये सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० थे, जिन्होंने नबी-ए-करीम स.अ.व. के वाकए मेराज की बिला शक व शुब्ह तसदीक कर दी थी।

अबू जहल और उसके साथियें से सवाल व जवाब के बाद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० खुद आप स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए और पूछाः

"अल्लाह के रसूल स.अ.व.! क्या वाकई आपने ऐसा फरमाया?

आप स.अ.व. ने फरमायाः "हां"

ये सुनते ही सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अर्ज़ किया "जो कुछ आपने फरमाया, उस पर ईमान लाता हूं और उसकी तसदीक़ करता हूं, क्योंकि आप बिल्कुल सच्चे हैं।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को "सिद्दीक़" का लकब इस लिए मिला कि उन्होंने रसूलुल्लाह स.अ.व. की हर बात की फौरन

तसदीक़ की, उस मौका पर भी और दूसरे मवाके पर।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के बारे में अल्लाह के प्यारे रसूल स.अ.व. ने फरमायाः

"मुझ पर जिस किसी का भी एहसान था, मैंने उसका बदला चुका दिया, सिवाए अबू बकर के, मुझ पर अबू बकर का एहसान बाकी है, उसका बदला अल्लाह तआला ही क़यामत के दिन अता करेगा। और मुझे किसी के माल ने इतना नफा नहीं दिया जितना अबू बकर के माल ने दिया। अगर मैं किसी को अपना जानी दोस्त बनाता तो अबू बकर को बनाता। ख़बरदार! तुम्हारा साथी (मुहम्मद स.अ.व.) अल्लाह का दोस्त है। यानी चूंकि अल्लाह तआला ने मुझे दोस्त बनाया है इसलिए अल्लाह के सिवा मैं किसी को दोस्त नहीं बना सकता।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ५७३ ई० में पैदा हुए। रसूल नबी-ए-करीम स.अ.व. उनसे तकरीबन अढ़ाई साल कब्ल दुनिया में तशरीफ ला चुके थे। इस लिहाज़ से नबी-ए-करीम स.अ.व. आमुल फील के पहले साल और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० आमुल फील के दूसरे साल पैदा हुए। "आमुल फील" हाथियों वाले साल को कहते हैं यानी वह साल जिसमें ईसाई हुकमरां अबरहा ने हाथियों के लश्कर के साथ काबा को ढाने के लिए चढ़ाई की थी और अल्लाह तआला ने नन्हे मुन्ने परिन्दों के ज़रिए उसे और उसके लश्कर को खाए हुए भूसे के मानिन्द बना दिया था।

नबी-ए-करीम स.अ.व. की बेअशत से पहले अरब के लोग जाहिलियत का शिकार थे उनमें बेशुमार इख़लाकी बुराईया पाई जाती थीं।

लोग पत्थर और लकड़ी के बने बुतों को माबूद बनाकर उनकी पूजा करते थे। शराब नोशी और जुआ उनकी घुट्टी में पड़े थे। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने उस मआशरे में जन्म लिया, लेकिन वह उन सब खराबियों से पाक थे। वह बचपन ही से नेक फितरत थे। इसलिए उन बुराईयों से बचे रहे।

वालिद ने आपका नाम अब्दुल काबा रखा था, जिसका मतलब है काबा का बन्दा। बाद में उस नाम को नबी-ए-करीम स.अ.व. ने अब्दुल्लाह से बदल दिया, लेकिन आप अबू बकर के नाम से मशहूर हुए। अबू बकर दर असल आपकी कुन्नियत थी। अरबों में बाप बेटे, बेटी, या मां की निसबत से एक और नाम रख दिया जाता है जिसे कुन्नियत कहते हैं। बसा अवकात यह नाम किसी खूबी कि बिना पर रखा जाता था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की कुन्नियत का तअल्लुक भी उसी किस्म से है। असल में बकर का मतलब है किसी काम में पहल करना। आप नेकी के कामों में हमेशा पहल करते थे आपकी अच्छी आदात और नेकी के कामों पर बढ-चढ़ कर हिस्सा लेने की वजह से लोगों ने आपकी कुन्नियत अबू बकर रख दी थी।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को लकबे सिद्दीक किस बिना पर मिला, ये तो आप पढ़ ही चुके हैं इसके अलावा उन्हें दो और लकब मिलेः अतीक और यारेगार। अतीक का मतलब है आज़ाद, नबी-ए-करीम स.अ.व. ने उनको एक मौका पर फरमाया था

"तुम अल्लाह की तरफ से दोज़ख से आज़ाद हो।"

"यारे गार" का लकब इसलिए मिला कि हिजरत के दौरान गारे

सौर में वह नबी-ए-करीम स.अ.व. के साथ थे।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का तअल्लुक बनू तयम से था। सातवीं पुश्त में आपका नसब रसूलुल्लाह स.अ.व. से जा मिलता है। आपके वालिद का नाम उस्मान बिन आमिर और कुन्नियत अबू कहाफा थी और वह इसी नाम से मशहूर थे। तिजारत उनका पेशा था और उनका शुमार मक्का के कामयाब और खुशहाल ताजिरों में होता था। फतेह मक्का के रोज़ उन्होंने इस्लाम कबूल किया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० खुद उन्हें लेकर नबी-ए-करीम स.अ.व. की खिदमत में हाज़िर हुए ताकि वह बैअत कर सकें। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की वालिदा सल्मा बिन्त सख़र रजि० ने उनके इस्लाम लाने के चन्द ही साल बाद इस्लाम कबूल कर लिया था। उनकी कुन्नित उम्मुल खैर थी।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का बचपन बहुत पाकिज़ा और अच्छे अन्दाज़ में गुज़रा वह दिल के बहुत नरम थे। लोगों से हमदर्दी और मुहब्बत उनका शेआर था। जहां किसी को तकलीफ में देखते, उस की तकलीफ दूर करने की हर मुम्किन कोशिश करते। आपने कभी झूठ नहीं बोला। आपको इल्म हासिल करने की बहुत लगन थी। इसी बिना पर आपने अरबी ज़बान व अदब को खास तौर से पढ़ा। लोग आपके इल्म की वजह से आपको अरबी ज़बान का आलिम समझते थे।

आपने १८ बरस की उम्र में तिजारत का पेशा इख्तियार किया तिजारत करते हुए आपने हमेशा सच्चाई 'और दयानत दारी से काम लिया। जाहिलियत के उस दौर में यह बड़ी नायाब खूबियां थीं! इसलिए आपकी तिजारत चमक उठी और आपका शुमार मक्का के मालदार और

मुअज़्ज़ज़ ताजिरों में होने लगा। तिजारत के सिलसिले में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० अकसर यमन, इराक और शाम जाते थे, वहां से कपड़ा खरीद कर लाते और फरोख्त करते थे। तिजारत और ज़ाति खूबियों के हवाले से उनका खानदान पहले ही नेक नाम था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की नेकी, दयानत दारी और मिलनसारी और परहेज़गारी ने उनकी शोहरत और इज़्ज़त को चार चांद लगा दिए थे। लोग अपने मसायल के हल और मुश्किलात से निपटने के लिए अकसर आपके पास आते थे और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० हमेशा उनके काम आते थे।

ये शोहरत और इज़्ज़त उन्हें महज़ मक्का और कुर्बोजवार के कबीलों ही में हासिल नहीं थी, बल्कि हमसाया इलाकों के दूसरे अरब कबीले भी उनका बहुत एहतिराम करते थे। ये नेक नामी और शोहरत उन्हें रसूलुल्लाह स.अ.व. के करीब ले आई। नबी-ए-करीम स.अ.व. भी तिजारत के सिलसिले में सफर करते रहते थे। नबी-ए-करीम स.अ.व. और अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने कई तिजारती सफर इकट्ठे किए। दोनों हस्तियों का यह तिजारती तअल्लुक रफता-रफता गहरी दोस्ती में बदलता गया। इस तरह उनके दरमेयान मोहब्बत का रिश्ता मज़बूत तर होता गया और तिजारत के इलावा भी उनका वक्त इकट्ठे गुज़रने लगा। यहां तक रसूलुल्लाह स.अ.व. सुबह व शाम उनके घर तशरीफ़ ले जाने लगे।

वैसे तो सफर में भी आदमी एक दूसरे की खूबियां पहचान जाता है, लेकिन जब यह साथ सुबह से लेकर शाम तक फैल जाए, फिर तो किसी बात के ढके छिपने रहने का इमकान बाकी ही नहीं रहता। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० रफता-रफता रसूलुल्लाह स.अ.व. की बेइन्तिहा खूबियों और आला अख़लाक को जान गए। पूरे मक्का में उनसे बढ़कर

और कोई नबी-ए-करीम स.अ.व. की ज़िन्दगी और शब व रोज़ से वाकिफ नहीं था।

फिर वह वक्त भी आ गया जब चालीस साल की उम्र में मुहम्मद स.अ.व. पर वही नाज़िल हुई और आप स.अ.व. ने नबूवत का एलान फरमाया, सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० उस वक्त ३८ साल के थे चूंकि वह नबी-ए-करीम स.अ.व. की ज़ाते मुबारका से बहुत अच्छी तरह वाकिफ थे, उन्हें इल्म था कि आप स.अ.व. कभी झूठ नहीं बोल सकते, इसलिए उन्होंने फौरन इस्लाम कबूल कर लिया। उनसे पहले तीन अफराद इस्लाम कबूल कर चुके थे, यानी सय्यदा खदीजा, सय्यदना अली और ज़ैद बिन हारसा रज़ि०। सय्यदा खदीजा रज़ि. ने औरतों में सबसे पहले इस्लाम कबूल किया। सय्यदना अली रज़ि, आप स.अ.व. के चचाज़ाद भाई थे, कबूले इस्लाम के वक्त उनकी उम्र महज़ दस साल थी। गोया बच्चों में सबसे पहले इस्लाम कबूल करने का शर्फ अली रजि. को हासिल हुआ, जबकि ज़ैद बिन हारसा रजि. आप स.अ.व के खादिम और मुंह बोले बेटे थे।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० पहले आज़ाद मर्द थे जिन्हें इस्लाम कबूल करने की सआदत हासिल हूई। उन्हें चूंकि कुरैश में एक मुम्ताज़ हैसियत और मुकाम हासिल था इसलिए इनके कबूले इस्लाम का मआमला सिर्फ उन्हीं के ज़ात तक महदूद न रहा, बल्कि ईमान की रौशनी का दायरा बड़ी तेज़ी के साथ फैलने लगा। लोग तेज़ी से इस्लाम कबूल करने लगे।

नबूवत के ऐलान को तकरीबन तीन साल हो चुके थे। नबी-ए-करीम

स.अ.व. ने इस अरसे में दावत व तबलीग का काम इन्तिहाई राज़दारी से सर अंजाम दिया। आप सअ.अ.व. की तवज्जह ज़्यादा तर उन लोगों की तरफ थी जो बाशऊर और समझदार थे। क्योंकि ऐसे ही लोगों से उम्मीद की जा सकती थी कि जब उनके सामने इस्लाम की दावत पेश की जाए तो वह झगड़ा नहीं करेंगें, ईमान की सच्चाई को दिल व जान से तसलीम कर लेंगें। और इस काम में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने आप स.अ.व. का पूरा पूरा साथ दिया। आम लोगों में इस्लाम की दावत पहुंचाने के साथ-साथ उन्होंने कुरैश के बड़े-बड़े लोगों को भी हक का पैगाम सुनाया जिसके नतीजे में सय्यदना उस्मान, तलहा, जुबैर, साद बिन अबी वकास, और अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़िअल्लाह अन्हुम जैसे बुलन्द मरतबा लोगों ने ईस्लाम कबूल कर लिया।

इन तीन सालों की तबलीग के नतीजे में तकरीबन डेढ़ सौ अफराद ने इस्लाम कबूल किया। इस्लाम कबूल करने वाले, अपने इस्लाम को काफिरों से छिपा कर रखते थे। नमाज़ें छिप कर पढ़ी जाती थीं। ताकि काफ़िरों को इसका इल्म न हो और उनके खिलाफ कोई तुफान न उठ खड़ा हो लेकिन राज तो होते ही खुलने के लिए है, भेद कितना भी छिपाया जाए, वक़्त के हाथों इस पर से पर्दा उठ कर रहता है। एक दिन कुछ काफिरों ने मुसलमानों को नमाज़ अदा करते हुए देखा लिया। फिर क्या था उन्होंने उन्हें खूब बुरा भला कहा। बाप दादा का मज़हब छोड़ने पर मलामत की। इस बात की इत्तिला अल्लाह के रसूल स.अ.व. को हुई थी मुसलमानें को अपने एक प्यारे सहाबी अरकम बिन अरकम रज़ि. के मकान में नमाज़ के लिए जमा होने की हिदायत कर दी ये मकान

अपने महल्ला वकू के एतेबार से बहुत महफूज़ था। सफा पहाड़ी करीब होने की बिना पर काफिरों के लिए हमला करना आसान नहीं थां चुनांचे कदरे इतमिनान और सुकून से इस मकान में नमाज़ पढ़ना शुरू कर दी, लेकिन यह सुकून आरज़ी था।

नबुवत का चौथा साल था, अल्लाह तआला के हुक्म से नबी-ए-करीम स.अ.व. ने इस्लाम की खुल्लम खुल्ला तबलीग़ शुरू फरमाई तो मसाएब के नये दौर का आगाज़ हो गया। काफिर सेखपा हो गये, इनका गुस्सा आखिरी हदों को छूने लगा, वह मुसलमानों को सताने लगे। दुश्मनी के रंग रूप बदल-बदल कर सामने आने लगे। तकरीबन ६ साल मुसलमानों ने ये जुल्म व सितम बर्दाश्त किए। लेकिन कुफ्फार की अज़ियतें और तकालीफ दीने हक का रास्ता न रोक सकीं, इस्लाम कबूल करने वालों की तादाद दिन ब दिन बढ़ती गई।

मसायब बर्दाश्त करने वालों में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० भी शामिल थे। उन्होंने अपना तमामतर माल इस्लाम की खातिर वक्फ कर दिया था। इनके पास तकरीबन चालीस हज़ार दिरहम थे, उसमें से ज़्यादा तर रकम उन्होंने गरीब मुसलमानों को काफिरों के पंजे से आज़ाद करवाने के लिए और इस्लाम की तरक्की के लिए इस्तेमाल कर डाली। उन्होंने अपने माल से जिन गुलामों को आज़ाद करवाया उनके नाम ये हैं: बेलाल बिन रेबाह, आमिर बिन फहीरह, उम्मे ओबैस, अबू फकीहा, नहदिया और उनकी बेटी और बनू मुअम्मल की लौंडी ज़ुनेरह रजि० अनहुम सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने इन सबको खरीद कर आज़ाद कर दिया। आपके वालिद अबू कहाफा जो उस वक्त तक इस्लाम

नहीं लाए थे, बेटे को इस तरह दौलत लूटाते देख कर बोलेः

"बेटा मैं देख रहा हूं कि तुम जिन लोगों को आज़ाद करवाने पर पैसे खर्च कर रहे हो, वह बहुत कमज़ोर हैं। तुम मज़बूत लोगों को आज़ाद कराते तो वह तुम्हारे काम आते।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने जवाब दियाः

"इन गरीबों को मैंने अपने फायदे के लिए नहीं, अल्लाह को राज़ी करने के लिए आज़ाद कराया है, वही उसका बदला देगा।"

यह जवाब सुन कर उनके वालिद खामोश हो गए। नतीजे में जिन लोगों ने इस्लाम कबूल किया उनमें सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के चचाज़ाद भाई तलहा रजि० भी थे। इनके इस्लाम कबूल करने का हाल कुरैश के एक सरदार को मालूम हुआ तो उसने अपनी इस्लाम दुश्मनी का सुबूत देते हुए सय्यदना तलहा और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को रस्सी से बांध कर खूब मारा पीटा लेकिन उसका हर जुल्म व सितम उनके इरादों को पुख्ता करता रहा और वह इस्लाम पर कायम रहे।

एक रोज़ नबी-ए-करीम स.अ.व. खाना काबा तशरीफ ले गए। काफिरों ने देखा तो मौका गनीमत जान कर आप स.अ.व. को सताने पर तुल गए और आप स.अ.व. को घेरे में ले लिया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को काफ़िरों की इस हरकत की खबर हुई तो फौरन काबा का रूख किया और कुफ्फारे मक्का से कहाः

"तुम पर अफसोस है, तुम एक ऐसे शख़्स को मारे डालते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालांकि वह अल्लाह की साफ नज़र आने वाली निशानियां लेकर तुम्हारे पास आया है।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का इतना कहना था कि काफिर और भी तैश में आ गए। उन्होंने रसूल स.अ.व. को छोड़ दिया लेकिन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० पर पिल पड़े। मार-मार कर उनको लहूलहान कर दिया, लेकिन वह मार खाकर बस इतना कहते थे:

"ऐ इज़्ज़त और शान वाले अल्लाह! तेरी ज़ात बहुत बरकत वाली है।"

मार खाते-खाते बेहोश होकर गिर पड़े। उनके कबीले वालों को जब उनका हाल मालूम हुआ तो दौड़े आए और उठा कर घर ले गए। सय्यदा आयशा रजि० फरमाती हैं कि अब्बा जान को ज़ख़्मी हालत में घर लाया गया तो उनकी हालत यह थी कि सर पर जिस जगह हाथ लगता वहां से बाल झड़ जाते, बहुत देर के बाद उन्हें होश आया तो सबसे पहले उनके मुंह से यह अल्फाज़ निकले:

"रसूलुल्लाह स.अ.व. का क्या हाल है?"

इस मौका पर उनके कबीले के कुछ ऐसे लोग भी वहां मौजूद थे जो इस्लाम नहीं लाए थे, उन्होंने जब उनकी ज़बान से ये अल्फाज़ सुने तो बहुत गुस्से में आये ये बात उनकी अक़्ल व फहम से बालातर थी कि जिसकी वजह से उनका इतना बुरा हाल हुआ है, इस हालत में ख्याल आया भी तो सिर्फ़ उसी का, कहने लगे:

"तुम पर अफसोस है, इस हालत में भी मुहम्मद स.अ.व. का ख्याल नहीं छोड़ते।"

उन लोगों के जाने के बाद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अपनी वालिदा से फिर वही सवाल पूछा, गोकि उनकी वालिदा इस्लाम की रौशनी से महरूम थीं लेकिन बेटे की मुहब्बत में उनके रिश्ते को कमज़ोर नहीं पड़ने दिया था। उनकी मां ने कहा:

"मुझे उनका कुछ हाल मालूम नहीं।"

वह बोले: "जा कर ख़त्ताब की बेटी उम्मे जमील रजि० से पूछें।"

उम्मे जमील रज़ि०, सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की बहन थीं। उनका असली नाम फातिमा था, वह मुसलमान हो चुकी थीं लेकिन अब तक वह बड़ी कामयाबी से अपने कबूले इस्लाम को काफिरों से छिपाए हुए थीं। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की वालिदा ने जब उनके यहां जाकर उनसे कहा कि मेरा बेटा मुहम्मद स.अ.व. का हाल पूछ रहा है तो उम्मे जमील रज़ि० के साथ उनके घर गई, जब उन्होंने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की हालत देखी तो बेइख़्तियार चीख़ पड़ीं और बोलीं:

"अल्लाह की कसम! जिन लोगों ने आपके साथ ये सुलूक किया है वह सख़्त काफिर हैं बुरे लोग हैं, मुझे उम्मीद है अल्लाह उनसे बदला ज़रूर लेगा।"

"रसूलुल्लाह स.अ.व. का क्या हाल है?"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने उम्मे जमील रज़ि० से रसूलुल्लाह स.अ.व. का हाल दरयाफ्त करते हुए पूछा।

उम्मे जमील रज़ि० ने हैरानी से उनकी तरफ देखा, क्योंकि सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि० की वालिदा भी करीब थीं। अभी तक वह मुसलमान नहीं हुई थीं। उम्मे जमील रज़ि० ने आहिस्ता से कहा:

"आपकी वालिदा सुन रही हैं।"

उस पर वह बोले: "तुम उनकी फिक्र न करो, उनसे कोई खतरा नहीं।"

तब उन्होंने बताया कि आप स.अ.व. बिल्कुल खैरयत से हैं और दारे अरकम में हैं। ये सुन कर वह बोले:

"अल्लाह की कसम! मैं उस वक्त तक कुछ खाऊंगा न पीऊंगा जब तक रसूलुल्लाह स.अ.व. को देख न लूंगा।"

चुनांचे रात की तारीकी में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को नबी-ए-करीम स.अ.व. के पास ले जाया गया। आप स.अ.व. ने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की हालत देखी तो आखों में आंसू आ गाए। झुक कर उनकी पेशानी चूमी। इस मौके पर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अपनी वालिदा के मुसलमान होने की ख्वाहिश ज़ाहिर की आप स.अ.व. नें दुआ की और उनकी वालिदा ने उसी वक्त इस्लाम कबूल कर लिया।

काफिरों का जुल्म जब अपनी इन्तिहा को छूने लगा तो रसूलुल्लाह

स.अ.व. ने मुसलमानों को हब्शा की तरफ हिजरत करने का मशवरा दिया। काफी मुसलमान हिजरत कर गए। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने भी हिजरत की गर्ज़ से मक्का को छोड़ा। रास्ते में उन्हें कबीले कारह के सरदार रबीआ बिन रफी मिले। उसकी कुन्नियत इब्नुद्दगिन्ना थी। उसने पूछा:

"अबू बकर! कहां का इरादा है?"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने फरमाया: "मेरी कौम ने मुझे निकाल दिया है मुझे अज़ियत पहुंचाई और मुझ पर हालात तंग कर दिए। लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि इबादत के लिए किसी और जगह चला जाऊं।"

इब्नुद्दगन्ना ने कहा: "अबू बकर, आप जैसे शख्स को निकलना चाहिए, न निकालना चाहिए। आप तो खानदान व कबीले को इज़्ज़त व ज़ीनत बखश्ते हैं, हक के सिलसिले में पेश आने वाले मसायब में मदद करते हैं, भलाई के काम करते हैं मैं आपको पनाह देता हूं वापस चलें, आप मेरी पनाह में हैं, अपने शहर में अपने रब की इबादत करें।"

चुनांचे सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० उसके साथ वापस लौट आए मक्के में दाखिल हो कर इब्नुद्दगिन्ना ने कहा:

"ऐ कुरैशियो! मैंने अबू कहाफा के बेटे को पनाह दी है, लिहाज़ा उसके साथ खैर व भलाई के साथ पेश आना।"

कुरैश ने इस शर्त पर उनकी पनाह मंजूर कर ली कि सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० अपने घर के अन्दर जिस तरह चाहें इबादत करें घर

से बाहर इबादत न करें, न ऊंची आवाज़ में कुरआन पढ़ें। उन्होंने यह बात मान ली लेकिन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का दिल बहुत नर्म था। जब वह घर में कुरआन की तिलावत करते तो बे इख्तियार रोने लगते उनके रोने की आवाज़ सुनकर लोग धरों से निकल आते। राह चलते रूक जाते और कुरआन सुनने लगते। मक्का के काफिरों ने जब यह माजरा देखा तो इब्नुद्दगिना के पास गए और जाकर शिकायत की। इब्नुद्दगिना ने जब सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० से कुरैश की शिकायत बयान की तो उसकी पनाह वापस कर दी और फरमायाः

"मैं अपने लिए अल्लाह की पनाह पर राज़ी हूं।"

उसके बाद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० बे फिक्र होकर पहले की तरह इस्लाम की दावत फैलाने का काम करने लगे, काफिरों ने उन्हें कई बार शदीद तकालीफ़ पहुंचायीं। लेकिन वह साबित कदमी से इस्लाम और अल्लाह के रसूलुल्लाह स.अ.व. की हिमायत में डटे रहे। उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशा फरमाती हैं:

"मैंने अपने होश में अपने वालिदैन को दीने हक की पैरवी करते हुए देखा है और हम पर कोई दिन भी ऐसा नहीं गुज़रता था कि सुबह व शाम दोनों वक्त रसूलुल्लाह स.अ.व. हमारे पास न आते।"

एक दिन नबी-ए-करीम स.अ.व. ने मुसलमानों से फरमायाः

"मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखाई ग़ई है, वहां खजूरों के दरख्त हैं और उसके दोनों तरफ पत्थरीले मैदान हैं।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० जब मदीना हिजरत की तैयारी

की तो रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उन्हें फरमायाः

"ठहर जाओ, क्योंकि उम्मीद है कि मुझे भी इजाज़त मिल जाएगी।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अर्ज़ कीः

"मेरे वालिदैन आप पर कुरबान हों, क्या आपको इसकी उम्मीद है?"

आप स.अ.व. ने फरमायाः "हां" यूं आप स.अ.व. ने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को अपने हमराह सफर के लिए रोक लिया।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने रेफ़ाक़त सफर के ख्याल से अपना इरादा मुलतवी कर दिया और चार महीना तक दो ऊंटों को केकर के पत्ते खिला कर तैयार करते रहे।

सय्यदा आयशा बयान करती हैं कि एक दिन हम दोपहर के वक्त बैठे हुए थे, इतने में किसी ने कहाः वह देखो! रसूलुल्लाह स.अ.व. अपने सर और मुंह पर चादर ओढ़े तशरीफ ला रहे हैं। आप स.अ.व. इससे पहले कभी इस वक्त तशरीफ नहीं लाए थे। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने कहाः "अल्लाह की कसम आप इस वक्त किसी खास ज़रूरत ही से आए हैं।" रसूलुल्लाह स.अ.व. तशरीफ लाए और फरमायाः

"मुझे हिजरत की इजाज़त मिल गई है।"

ये सुन कर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अर्ज़ कियाः ऐ

अल्लाह के रसूल स.अ.व.! मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हों मुझे भी आपके साथ चलने की इजाज़त है?"

आप स.अ.व. ने फरमायाः "हां!"

यह सुन कर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० इतना खुश हुए कि रोने लगे। सय्यदा आयशा फरमाती हैं:

"अल्लाह की कसम! मुझे इस रोज़ पता चला कि खुशी के आंसू भी होते हैं।"

इस मौका पर अपनी दो ऊंटनियों को नबी-ए-करीम स.अ.व. पर पेश करते हुए कहाः

"मेरी इन दो ऊंटनियों में से एक आप ले लें।"

आप स.अ.व. ने फरमायाः "मैं कीमत देकर लूंगा।"

सय्यदा आयशा बयान करती हैं कि हमने जल्दी से दोनों के लिए सफर का सामान तैयार किया एक चमड़े की थैली में उनके लिए खाना रख दिया। सय्यदा अस्मा बिन्त अबी बक्र रजि. ने अपने कमरबन्द का एक टुकड़ा काट कर उससे थैले का मुंह बन्द किया इसी वजह से उन का लकब "ज़ातुन नताकैन" रखा गया।

फिर रसूलुल्लाह स.अ.व. और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० जबले सौर के गार में पहुंचे। ये गार मक्का के जनूब मश्रिक में तकरीबन ५ किलो मीटर के फासले पर है। रास्ता पत्थरीला था। दोनों के पांव ज़ख्मी हो गये। रास्ते में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० कभी आप

स.अ.व. के आगे हो जाते और कभी पीछे। आप स.अ.व. ने वजह पूछी तो अर्ज़ कियाः

"जब मुझे दुश्मन का आगे से खतरा महसूस होता है तो मैं आगे हो जाता हूं। पीछे से कोई खतरा महसूस करता हूं तो पीछे हो जाता हूं।"

गारे सौर बहुत बुलन्दी पर था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० बड़ी मुश्किल से आप स.अ.व. के साथ ऊपर पहुंचे। पहले सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० खुद अन्दर दाखिल हुए। गार को अच्छी तरह साफ किया, झाड़ा पोंछा, जहां-जहां सूराख नज़र आये उनको अपनी चादर फाड़ कर बन्द किया, फिर भी दो सूराख बच रहे। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने उन सूराखों पर अपने पांव रख दिए फिर अल्लाह के रसूलुल्लाह स.अ.व. से अर्ज़ की कि अन्दर तशरीफ ले आएं। आप स.अ.व. अन्दर तशरीफ ले गए और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की आगोश में सर रखकर सो गए। उधर जिन सूराखों पर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने पांव रखे थे उनमें से किसी चीज़ ने आपको डस लिया उन्होंने काफी देर सब्र के साथ उस तकलीफ को बर्दाश्त किया मामूली सी भी हरकत न की कि कहीं आप स.अ.व. की आंख न खुल जाए, लेकिन जब दर्द हद से बढ़ गया तो उनकी आंखों में आंसू आ गए। आंसू रसूलुल्लाह स.अ.व. के चेहरे पर गिरे तो आप स.अ.व. की आंख खुल गई। आप स.अ.व. ने फरमायाः

"अबू बकर, तुम्हें क्या हुआ?"

अर्ज़ किया "मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान! मुझे किसी चीज़ ने काट लिया है।"

रसूलुल्लाह स.अ.व. ने उस जगह पर अपना लुआब लगा दिया, ज़हर का असर फौरन दूर ही गया और तकलीफ जाती रही।

रसूलुल्लाह स.अ.व. और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० तीन दिन तक गारे सौर में छिपे रहे। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के बेटे अब्दुल्लाह बिन अबी बकर रज़ी० रात को उनके पास आ जाते थे और रात के पिछले पहर वापस चले जाते थे। सुबह वह कुरैशे मक्का के साथ इस तरह घुल मिल जाते जैसे रात को वहीं रहे हैं। दिन भर उन की बातें सुनते, उनके इरादे जानते और रात को ये खबरें लेकर गारे सौर पहुंच जाते। आमिर बिन फौहैरा सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के गुलाम थे, वह गार के आस पास बकरियां चराते और रात को उन्हें बकरियों का ताज़ा दूध पहुंचाते सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की बेटियां इन दोनो के लिए खाना तैयार करतीं। जिसे रात की तारीकी में उन तक पहुंचाया जाता। इस तरह सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का पूरा घराना आप स.अ.व. की खिदमत की सआदत में लगा रहा।

तीसरी रात इस गार से निकले। अब्दुल्लाह बिन अरीकत नामी एक शख्स को उजरत पर रास्ता बताने के लिए साथ ले लिया गया। आमिर बिन फहैरा रज़ी. भी साथ थे। मक्के के काफिर अभी तक इनका सुराग लगाने के लिए बेकरार थे। सुबह से लेकर शाम तक वह उन्हें ढूंढते फिरते थे। पहले दिन काफिरों ने रसूलुल्लाह स.अ.व. के घर में सय्यदना

अली रज़ी० को पाया था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० भी घर में न मिले, तब उन्होंने ऐलान किया:

"जो शख्स मुहम्मद स.अ.व. या अबू बकर रज़ी० को पकड़ कर लाएगा, उसे हर एक के बदले में सौ ऊंट इनाम दिए जाएंगे।

कबीला बनु मुदलज का सरदार सुराका यह ऐलान सुनते ही हथियार सजा कर उनकी तलाश में घोड़े पर रवाना हुआ सुराका मज़बूत जिस्म का मालिक, एक बहादुर शख्स था। उसकी तलाश राएंगा न गई। तलाश करते करते वह उनके करीब पहुंच गया। लेकिन इससे पहले कि वह करीब पहुंच पाता, घोड़े ने ठोकर खाई और सुराका को लिए ज़मीन पर जा रहा, सुराका संभल कर दुबारा घोड़े पर बैठा लेकिन फिर ठोकर खाई और ज़मीन पर जा गिरा सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ये सारा माजरा मुड़-मुड़ कर देख रहे थे। दुश्मन को सर पर देख कर बोले:

"अल्लाह के रसूल स.अ.व. हमारा पीछा करने वाला बहुत करीब आ गया है।"

रसूल अल्लाह स.अ.व. ने फरमाया:

"गम न करो अल्लाह हमारे साथ है।"

इसके साथ सुराका का घोड़ा ज़मीन में धंस गया। ये देख कर सुराका पुकारा:

"मुझे माफ कर दीजिए। मैं आपको कोई तकलीफ नहीं पहुंचाऊंगा।"

नबी-ए-करीम स.अ.व. ने दुआ की, घोड़ा बाहर निकल आया

सुराका आजज़ी के साथ सर झुकाए करीब आया और आप स.अ.व. को काफिरों के एलान के बारे में बताया। आप स.अ.व. ने उसे किसी को भी अपने बारे में खबर देने की मुमानेअत की और उसे जाने की इजाज़त दे दी।

यसरिब यानी मदीना के लोगों को आपकी आमद की इत्तेला मिल चुकी थी। वह बेचैनी से आपकी राह देख रहे थे। आप स.अ.व. आठ दिन के सफर के बाद कुबा के करीब पहूंचे। कुबा मदीने से चार किलो मीटर के फासले पर जुनूब मग्रिक में एक गांव था। लोगों को आप स.अ.व. की आमद की खबर हुई तो वह अल्लाहु अकबर के नारे लगाते उमड़ पड़े। आप स.अ.व. ने कुबा में मस्जिद बनवाई। चन्द दिन ठहरने के बाद वहां से मदीने की तरफ रवाना हुए। मदीने में आप स.अ.व. और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि०, अबू अय्यूब अंसारी रज़ी० के यहां ठहरे। मदीने में मुसलमानों की सहूलत के लिए आप स.अ.व. ने मस्जिद बनाने को इरादा फरमाया। मस्जिद के लिए जो ज़मीन खरीदी गई उसकी कीमत सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अदा की। तमाम मुसलमानों ने मस्जिद की तामीर के लिए बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

मदीने में सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने पहले की तरह फिर कपड़े की तिजारत शुरू कर दी लेकिन ज़्यादातर वक्त नबी-ए-करीम स.अ.व. की खिदमत में बशर होता था। आपकी कोशिश होती थी कि हर वक्त और हर जगह नबी-ए-करीम स.अ.व. के साथ रहें।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० तमाम मारकों में रसूलुल्लाह स.अ.व. के साथ शरीक रहे। ग़ज़व-ए-बद्र में लड़ाई के आगाज़ कब्ल

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने बड़े अहसन अन्दाज़ से गुफ़्तगू की और मुसलमानों को मुखातिब करके फरमायाः

“हम अखिरी दम तक लड़ेंगे”

जंग के आगाज़ से पहले नबी-ए-करीम स.अ.व.काफी देर तक अल्लाह तआला से फतह व नुसरत के लिए दुआ करते रहे जब वक्त ज़्यादा गुज़र गया तो सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का दिल भर आया, वह बोलेः

“अल्लाह के रसूल स.अ.व.! अब बस कीजिए! आप बहुत दुआ मांग चूके, अल्लाह आप से किया हुआ वादा ज़रूर पूरा फरमाएगा।”

लड़ाई शुरू हुई, सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० रसूलुल्लाह स.अ.व. के करीब रहे, जो भी इधर का रुख करता वह फौरन आगे बढ़ कर उस पर हमला कर देते। काफिरों के इस लशकर में इनके बेटे अब्दुल्लाह भी शामिल थे। वह अभी मुसलमान नहीं हुए थे। जंग के बाद जब वह मुसलमान हो गए तो उस वक्त उन्होंने कहाः

“अब्बा जान, बद्र की लड़ाई में आप मेरी तलवार की ज़द में आए थे लेकिन मैंने वार नहीं किया था।”

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ये बात सुन कर मुसकुराए और कहाः “लेकिन अगर तुम मेरी तलवार की ज़द में आ जाते तो मैं तुम्हें हरगिज़ न छोड़ता।”

जंगे उहुद में मुसलमानो के एक दस्ते की गलती की वजह से जब मुसलमान मुसीबत से दो चार हो गए और चारो तरफ से काफिरों के घेरे

में आ गए, काफिर अल्लाह के रसूल स.अ.व. पर पूरी कुवत से टूट पड़े। उस वक्त जिन चन्द जांनिसार सहाबा ने दुश्मनों का मुकाबला किया उनमें सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० भी शामिल थे। इसी तरह गज़्वा-ए-हुनैन के मौके पर जब लोग मैदान छोड़ गए थे तो आप उन लोगो मे शामिल थे जो रसूलुल्लाह स.अ.व. के साथ साबित कदम रहे। जंगे खंदक में भी फौज के एक दस्ते के साथ खंदक की हिफ़ाज़त करते रहे। बाद में इस जगह पर एक मस्जिद बनाई गई जो मस्जिदे सिद्दीक के नाम से मशहूर हुई। गज़्वा-ए-तबूक के मौका पर स्याह झण्डा उनके हाथ में था। गर्ज़ कि सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० किसी भी मारकों में रसूलुल्लाह स.अ.व. से पीछे नहीं रहे। जब बैअते रिज़्वान हुई और सुलह की शरायत तय की गयीं तो कुछ शरायत मुसलमानों को नागवार गुज़रीं, लोग सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के पास आए और अपने ख्याल का इज़्हार किया। जिसके जवाब में उन्होंने कहा:

"आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह जिस तरह हुक्म देता है आप उसी तरह करते हैं। अल्लाह उनकी मदद करेगा। तुम उनकी इताअत करते रहो। अल्लाह की कसम वह हक पर हैं।"

गज़्वा-ए-ताएफ में आपके बेटे अब्दुल्लाह रज़ि० तीर लगने से ज़ख्मी हो गये। इसी ज़ख्म से उनकी वफात हुई तबूक की लड़ाई के मौके पर लश्कर के लिए हथियारों और सवारियों की बहुत कमी थी। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने मुसलमनों से फ़रमाया कि दिल खोल कर माल और सामान दें। चुनांचे हर मुसलमान चाहे वह अमीर था या गरीब, अपनी हैसियत के मुताबिक माल, घोड़े, ऊंट और गल्ला वगैरह लाया

और आप स.अ.व. की खिदमत में पेश कर दिया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने इस मौके पर ईसार की बेहतरीन मिसाल पेश की। अपने घर का सारा सामान ले आए। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने पूछा:

"अबू बकर! अपने बाल बच्चों के लिए क्या छोड़ कर आए हो?"

उन्होंने अर्ज़ किया: "उनके लिए अल्लाह और उसका रसूल काफी है।"

इस लड़ाई में फौज़ का झण्डा सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को दिया गया था। इस जंग में फौज का सारा इंतिज़ाम भी उन्हीं के हाथ में था।

जंगे तबूक से वापसी के बाद आप स.अ.व. ने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को अमीरे हज मुकर्रर फरमाया, उन्होंने लोगों को हज करवाया।

ग्यारह हिजरी में जंगे मूता का बदला लेने और रोम के बादशाह से जंग के लिए नबी-ए-करीम स.अ.व. ने एक लश्कर तैयार किया। इस लश्कर का सालार ओसामा बिन ज़ैद रज़ि० को मुकर्रर किया गया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० भी इस लशकर में शामिल थे। उन्होंने इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं की कि उनका सिपहसालार अठ्ठारह उन्नीस साल का नवजवान है। दर असल वह अल्लाह के रसूल स.अ.व. के हर हुक्म की तामील करना अपना दीनी फर्ज़ समझते थे। जो बात अल्लाह के रसूल स.अ.व. को पसन्द थी वह उन्हें भी पसन्द थी, जिस बात को अल्लाह के रसूल स.अ.व. ना पसन्द करते वह उन्हें भी ना

पसन्द होती।

हज्जतुलविदा के मौके पर जब नबी-ए-करीम स.अ.व. ने अपना आखिरी खुतबा देते हुए फरमाया:

"अल्लाह ने अपने एक बन्दे को इख्तिार दिया है कि चाहे तो दुनिया की नेमतों को कबूल कर ले और चाहे तो अलाह के पास जाकर उन नेमतों को कबूल कर ले जो वहां मिलने वाली हैं, तो उस बन्दे ने अल्लाह के पास जाकर मिलने वाली नेमतों को कबूल किया।"

ये खिताब सुन कर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० का दिल भर आया। वह समझ गए कि यह आप स.अ.व. ने अपने बारे में फरमाया है। जब नबी-ए-करीम स.अ.व. बीमार हो गए तो मर्ज़ की शिद्दत की वजह से आप स.अ.व. ने उन्हें नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० नमाज़ें पढ़ाने लगे। एक सुबह आप स.अ.व. को कुछ एफाका महसूस हुआ तो सहारा लेकर मस्जिद में तशरीफ ले आए। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० नमाज़ पढ़ा रहे थे। उन्होंने पीछे हटना चाहा तो आप स.अ.व. ने इशारे से उन्हें नमाज़ पढ़ाते रहने का हुक्म दिया।

१२ रबीउल अव्वल ११ हिजरी बरोज़ पीर रसूले करीम स.अ.व. ने वफात पाई ये दिन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के लिए सदमे का सबसे बड़ा दिन था। सहाबा-ए-किराम रज़ि० पर यह खबर बिजली बनकर गिरी थी। उस वक्त सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने बहुत मिसाली किरदार अदा किया। सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० का ज़ेहन यह

तसलीम करने के लिए तैयार नहीं था कि रसूलुल्लाह स.अ.व. वफात पा सकते हैं। उन्होंने तलवार निकाल कर कहा:

"जो शख्स यह कहेगा कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने वफात पाई, मैं उसे जान से मार दूंगा।"

जब सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने उनके मुतअल्लिक खबर पाई कि वह इस तरह की बातें कर रहे हैं तो आप मस्जिद में तशरीफ लाए और कहा:

"उमर, ठहरो! खामोश हो जाओ।"

फिर आपने लोगों के सामने तकरीर की:

"लोगो! जो शख्स तुममें से मुहम्मद स.अ.व. की इबादत करता था, वह जान ले कि मुहम्मद स.अ.व. वफात पा चुके हैं और जो अल्लाह तआला की इबादत करता था तो वह सुन ले कि अल्लाह तआला ज़िन्दा है वह कभी नहीं फौत होगा।" फिर आपने ये आयत तिलावत फरमाई:

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ
انقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئاً
وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ (آل عمران:١٤٤)

"मुहम्मद स.अ.व. सिर्फ रसूल ही हैं, इनसे पहले बहुत से रसूल आ चुके हैं, क्या अगर उनका इन्तेकाल हो जाए या वह शहीद हो जाएं तो तुम इस्लाम से अपनी एड़ियों के बल

फिर जाओगे? और जो कोई फिर जाए अपनी ऐड़ियों पर, तो हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा। अंकरीब अल्लाह तआला शुक्रगुज़ारों को नेक बदला देगा।"

सय्यदना अबू हुरैरा रज़ि० फरमाते हैं: "अल्लाह की कसम! उस वक्त ऐसी सूरतेहाल थी गोया लोगों को मालूम ही नहीं कि यह आयत नाज़िल हो चुकी है। खुद सैय्यदना उमर रज़ि० फरमाते हैं: "अल्लाह की कसम! जब मैंने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० से यह आयत सुना तो मैं ज़मीन पर बैठ गया। मैंने जान लिया कि रसूल अल्लाह स.अ.व. वफात पा चुके हैं।

नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात के बाद मुसलमानों के लिए यह मसला बहुत अहम था कि अब उम्मते मुस्लेमा की सरबराही किसके सपुर्द की जाए, कौन है जिसे नबी स.अ.व. का जानशीन बनाया जाए? इसके लिए इनकी निगाहेइंतेखाब सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० पर पड़ी, क्योंकि आप नबी-ए-करीम स.अ.व. के हिजरत के साथी भी थे और इनके बेहतरीन रफीक भी, आप रसूलुल्लाह स.अ.व. की तरफ से अमीरे हज भी मुकर्रर हुए, सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० नबी-ए-करीम स.अ.व. की ज़िन्दगी ही में आप स.अ.व. की जगह नमाज़ में इमामत फरमाई, इन्हीं बातों के पेशे नज़र मुसलमानों ने मुत्तफेका तौर पर आपको ख़लीफा मुकर्रर कर लिया। ख़लीफा बनने के बाद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अपना पहला खुतबा देते हुए कहा:

"लोगो! अल्लाह की कसम मैंने कभी तुम्हारा अमीर बनने की ख्वहिश नहीं की तुमने मुझ पर एक ऐसा बोझ डाल दिया है जिसके

उठाने की ताकत मैं अपने अन्दर नहीं पाता और अल्लाह की मदद के बगैर इसको संभाल भी नहीं सकता। लोगो! मुझे तुम्हारा खलीफा बनाया गया है और मैं तुम से बेहतर नहीं हूं। अगर मैं अच्छे काम करूं तो मेरी मदद करना और अगर मैं गलती करूं तो मुझे दुरूस्त कर देना। याद रखो! सच्चाई अमानत है और झूठ खयानत। तुमसे जो कमज़ोर है वह मेरे नज़दीक ताकतवर है। यहां तक कि मैं इसका हक दिलवादूं और तुम में से जो ताकतवर है वह मेरे नज़दीक कमज़ोर है, यहां तक कि मैं इससे दूसरों का हक वसूल कर लूं। जो कौम अल्लाह तआला की राह में जिहाद तर्क कर देती है, अल्लाह तआला उस पर ज़िल्लत मुसल्लत कर देता है। और जिस कौम में बेहयाई फैल जाती है इस पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होता है। जब तक मैं अल्लाह और इसके रसूल स.अ.व. की अताअत करता रहूं तुम मेरी अताअत करो, और जब मैं अल्लाह और इसके रसूल स.अ.व. की नाफरमानी करूं तो तुम पर मेरा हुक्म मानना फर्ज़ नहीं। अब नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ अल्लाह तुम पर रहम फरमाए।"

इस तरह सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० मुसलमनों के पहले खलीफा बने। खलीफा बनने के बाद उन्होंने जो हुक्म जारी किया इससे न सिर्फ उनकी बसीरत और दानाई ज़ाहिर होती थी बल्कि इनके इस फैसले ने मिल्लते इस्लामिया को इन्तेशार और वस्वसों से निकाल कर मज़बूत बुनियादों पर ला खड़ा किया। नबी-ए-करीम स.अ.व. ने ओसामा बिन ज़ैद की सालारी में जो लश्कर शाम भेजने के लिए तैयार किया था वह अभी तक रवाना नहीं हुआ था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि०

ने इस लश्कर को जाने का हुक्म दिया, इसी दौरान में यह खबरें आनी लगीं कि बहुत से कबीले मुरतद हो गये हैं यानी इस्लाम से फिर गए हैं, कुछ कबाएल ने ज़कात देने से इनकार कर दिया है। यह वह लोग थे जिन्हें इस्लाम कबूल किए हुए ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ था। इसीलिए वह इस्लाम की हक्कानियत और सच्चाई को अभी समझ नहीं पाए थे। इन हालात को देख कर नबूवत के झूठे दावेदार भी पैदा हो गऐ।

जब इस तरह के हालात पैदा हो गए तो बहुत से लोगों ने सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को मशवरा दिया कि ओसामा रज़ि० के लश्कर को अभी रवाना न करें। इन लोगों का यहां रहना ज़्यादा ज़रूरी है ताकि अगर दुश्मन मदीने पर हमला करें तो इनका मुकाबला किया जा सके। इन मशवरा देने वालों में सय्यदना उमर रज़ि० भी शामिल थे। लेकिन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अपनी नर्म मज़ाजी के बावजूद इस मुआमला में सख्त मुवक्कफ इख्तियार किया और फरमायाः

"अल्लाह की कसम! अगर मदीना इस तरह आदिमियों से खाली हो जाए कि दरिन्दे ओर कुत्ते मुझे फाड़ खाएं, तब भी मैं इस लश्कर को शाम जाने से नहीं रोकूंगा, जिसको रसूलुल्लाह स.अ.व. ने शाम जाने का हुक्म फरमाया था।"

जब सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने इनको अपने इरादों में मज़बूत देखा तो मशवरा दिया कि लश्कर का सिपहसालार नवउम्र ओसामा रज़ि० की जगह किसी तजरबा कार और उम्र रसीदा सहाबा को बनाया जाए। यह सुन कर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को गुस्सा आ गया। उन्होंने फरमाया'

"यह तुम कैसा मशवरा दे रहे हो, जिस शख्स को रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अमीर बनाया मैं इसकी जगह किसी और को अमीर मुकर्रर कर दूं, ऐसा हरगिज़ नहीं होगा।"

चुनांचे ओसामा बिन ज़ैद रज़ि० का लश्कर तैयार किया गया। इस लश्कर को रूख्सत करने के लिए सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० खुद मदीने के बाहर दूर तक उन्हें छोड़ने गये। रूख्सत करते हुए कैफियत यह थी कि ओसामा रज़ि० घोड़े पर सवार थे और सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० उनके साथ पैदल चल रहे थे। ओसामा रज़ि० ने इनसे गुज़ारिश कीः

"रसूलुल्लाह स.अ.व. के ख़लीफा! या तो आप भी घोड़े पर सवार हो जाएं या मुझे घोड़े से उतर कर पैदल चलने दें।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने फरमायाः

"न तो मैं सवार हूंगा, न तुम्हें घोड़े से उतरन दूंगा। अगर कुछ देर के लिए मेरे कदमों पर अल्लाह की राह का गुबार पड़ जाए तो इससे मेरी शान में कमी नहीं आएगी।"

यह लश्कर दो माह दस दिन के बाद लश्करे रूम को इबरत नाक शिकस्त से दो चार कर के वापस आया।

ओसामा रज़ि० के लश्कर को रवाना फरमाने के बाद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० दोसरे फितनों की तरफ मुतवज्जह हो गए। जिन लोगों ने ज़कात देने से इनकार किया था उनके बारे में कहाः

"अल्लाह की कसम अगर उन्होंने मुझे वह रस्सी न दी जो रसूलुल्लाह स.अ.व. को अदा किया करते थे तो इसी रस्सी के न देने पर मैं इनसे केताल करूंगा।" सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने इन मसायल से निपटने के लिए ग्यारह लशकर तरतीब दिए थे।

ज़कात न देने वाले कबायल से जंग की गई और उससे ज़कात उसूल की गई। कुछ कबीले इस्लाम से फिर गए थे। लश्करे इस्लाम की मदद से उन्हें भी मोतिअ और फरमा बरदार बनाया गया। सबसे अहम और खतरनाक फितने झूठी नबूव्वत के थे। इनमें से सबसे खतरनाक मुद्दई यमामा का मसैलमा कज़्ज़ाब था। इसने तकरीबन चालीस हज़ार का लश्कर जमा कर लिया था। खालिद बिन वलिद रज़ि० अपने लशकर के साथ उसकी तरफ रवाना हुए। यमामा का मुसैलमा कज़्ज़ाब चन्द दिन तक मुजाहिदीन के मुहासरे में रहा। फिर खूंरेज़ जंग छिड़ गई। बिल आखिर मुसैलमा कज़्ज़ाब मारा गया, दस हज़ार मुरतद हलाक हुए। इस जंग में तकरीबन छः सौ मुसलमानों ने जामे शहादत नोश किया था। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० के दौरे खिलाफत में बरपा होने वाले फित्नों में यह फित्ना सब से बड़ा था। इस फित्ने के खातमे के साथ ही मुर्तदों की कमर टूट गई, मुसलमान गालिब आ गए और हर तरफ अमन हो गया।

जिस तरह सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को यह ऐज़ाज़ हासिल है कि उन्होंने मर्दों में सबसे पहले इस्लाम कबूल किया, इसी तरह उन्हें

नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात के बाद कुरआन को किताबी सूरत में जमा करने का शर्फ भी सबसे पहले हासिल हुआ। इसकी ज़रूरत यूं पेश आई कि मुसैलमा कज़्ज़ाब के खिलाफ जंगे यमामा में सैकड़ों हाफिज़े कुरआन सहाबा शहीद हो गए थे। खतरा था कि अगर जंगों में यूं ही शहादतें होती रहीं तो जिन लोगों के सीनों में कुरआन महफूज़ है वह खत्म हो कर रह जाएंगे। चुनांचे सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने ज़ैद बिन साबित से कहा:

"आप अक्ल मन्द और नवजवान आदमी हैं, मैं आपको इस काम पर मामूर करता हूं, आप रसूलुल्लाह स.अ.व. के लिए वह्री लिखते रहे हैं, लिहाज़ा आप कुरआने करीम के हिस्से तलाश करें और जमा करें।

ज़ैद रज़ि० ने खजूरों की शाखों, पत्थरों के सिलों, लोगों के सीनों, चमड़ों और हड्डियों पर लिखा हुआ कुरआन जमा किया। सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की ज़िन्दगी में यह कुरआन इनके पास रहा फिर सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि० के पास रहा और इनके बाद इनकी बेटी उम्मुल मोमिनीन हफसा बिन्ते उमर रज़ियल्लाहुअन्हा के पास आया....

अन्दरूनी मसायल पर काबू पाने के बाद आप ईरान और रूम की तरफ मुतवज्जह हुए उस वक्त दुनिया की बड़ी ताकतें यही थीं। ईरान के लोग आग के पुजारी थे और अहले रूम ईसाई थे, लेकिन दोनों ही इस्लाम और मुसलमानों के सख्त दुश्मन थे। रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अपनी ज़िन्दगी मुबारक में आस पास के मुल्कों के सरबराहों के नाम खुतूत रवाना फरमाए थे जिसमें उन्हें इस्लाम कबूल करने की दावत दी

गई थी। ईरान के बादशाह खुसरू परवेज़ ने आप स.अ.व. का खत फाड़ कर पुर्ज़ पुर्ज़ कर दिया था। आप स.अ.व. ने फरमाया थाः "अल्लाह इसके मुल्क के टुकड़-टुकड़े कर देगा।" फिर खुसरू परवेज़ के बेटे ने उसे कत्ल कर डाला। इसके बाद ईरानी आपस में लड़ने लगे। इसी दौरान सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० खलीफा बन गए। उन्होंने खालिद बिन वलीद रज़ि० को लश्कर देकर ईरान की तरफ रवाना किया। इनके अहले ईरान के साथ पन्द्रह मारके हुए इन सब में उन्होंने कामयाबी हासिल की।

रूम की तरफ चार लश्कर रवाना किए गए। इनके सिपहसालार यज़ीद बिन अबी सुफयान, शुरहबील बिन हस्ना, अबू ओबैदा बिन जर्राह और अम्र बिन आस रज़ि० थे। इन लश्करों में मुजाहिदीन की तादाद तकरीबन सत्ताईस हज़ार थी। यह लश्कर चार मुखतलिफ रास्तों से रूम पर हमलाआवर हुए। बाद में खालिद बिन वलीद रज़ि० भी इनसे आ मिले। अजनादेन के मकाम पर ज़बरदस्त मारके के बाद रूमी लश्कर को शिकस्त का सामना करना पड़ा। अजनादिन के मकाम पर शिकस्त खाकर रूमी यरमूक में जमा हो गए। वहां भी ज़बरदस्त जंग हुई। यह लड़ाईयां अभी जारी थीं कि सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० बीमार हो गए। सैय्यदना उमर रज़ि० इनकी जगह नमाज़ पढ़ाने लगे। जब बीमारी ने शिद्दत इख्तियार की तो सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने वसीयत फरमाईः

"मेरे बाद उमर खलीफा होंगे।"

यह वसीयत सून कर सहाबा ने कहाः

"आपने उमर रज़ि० को खलीफा बना दिया हालांकि इनके मेज़ाज में बहुत सख्ती है।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने फरमाया'

"जब खिलाफत का बोझ सर पर पड़ेगा तो यह सख्ती जाती रहेगी। वह उम्मत के बेहतरीन आदमी हैं।"

बीमारी की हालत में उन्होंने पूछा कि खलीफा बनने से अब तक बैतुलमाल से कितना वज़ीफा मिला है, हिसाब कर के बताया गया तो आपने फरमाया कि मेरी फलां ज़मीन बेच कर बैतुलमाल में जमा कर दी जाए। मुसलमानों के माले गनीमत में से इनके पास एक हबशी गुलाम, एक दूध देने वाली ऊंटनी और कुछ माल था। उन्होंने वसीयत की कि वफात के बाद यह चीज़ें सैय्यदना उमर रज़ि० तक पहुंचा दी जाएं। फिर उन्होंने वसीयत की कि मेरी क़ब्र रसूलुल्लाह स.अ.व. के पास बनाना। अपने कफन के बारे में उन्होंने कहाः

"मेरी इन दोनों चादरों को देखना! जब मैं फौत हो जाऊं तो इनको धोना और मुझे इन्हीं चादरों का कफन देना। इसलिए कि नये कपड़े की मैयत की बनिसबत ज़िन्दा शख्स को ज़्यादा ज़रूरत है।

फिर फरमायाः नबी-ए-करीम स.अ.व. की वफात किस दिन हुई थी? जवाब मिला पीर को, फरमायाः आज पीर है मुझे उम्मीद है कि मेरी

वफात भी आज ही होगी।" सैय्यदा आयशा बयान करती हैं कि जब सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० पर मौत का आलम तारी हुआ तो मैंने कौले हातिम से एक बात कहीः

"जब मौत के वक्त हलक में सांस घुट जाती है और इसकी वजह से सीना (दिल) तंग पड़ जाता है तो उस वक्त माल व दौलत किसी के कुछ काम नहीं आता।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने यह सुन कर फरमायाः "प्यारी बेटी! आप ऐसे न कहें बल्कि कहें: "मौत की सख्ती हक के साथ आ पहुंची, यही है वह चीज़ जिससे तू भागता था।"

२२ जमादिस्सानी हिजरत के तेरहवें साल पीर के दिन आप इस दुनिया से रूख्सत हुए। वफात के वक्त आपकी उम्र ६३ साल थी। आप दो साल तीन माह गयारह दिन खलीफा रहे।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० पेशे के लिहाज़ से ताजिर थे। इसी बिना पर आपने शोहरत पाई। आप खुश अखलाक ईमानदार और अपने मुआमलात को हमेशा बेहतर रखने वाले थे। खलीफा बनने के अगले रोज़ जब वह कंधे पर कपड़े के थान रख कर बेचने के लिए बाज़ार की तरफ निकले तो सैय्यदना उमर रज़ि० ने अर्ज़ कियाः

"अगर आप तिजारत करते रहे तो मुसलमानों के काम को कौन सर अंजाम देगा?"

चुनांचे मुसलमानों के आपस के मशवरें के बाद आपका वज़ीफा मुकर्रर हुआ ये भी इतना था जितना आम आदमी का खर्च होता है जब

वफात हुई तो सैय्यदा आयशा रज़ि० अन्हां फरमाती हैं: "जब मेरे वालिद फौत हुए तो हमने देखा कि उनके पास एक गुलाम था और एक ऊंट था जिस पर बाग की आब पाशी के लिए पानी लाया जाता था। पस उनकी वसीयत के मुताबिक हमने ये दोनों चीज़ें सैय्यदना उमर रज़ि० को भेज दीं। उमर रज़ि० उन्हें देख कर रो पड़े और फरमायाः अल्लाह अबू बकर रज़ि० पर रहम फरमाए! उन्होंने अपने बाद में आने वाले को सख्त मुश्किल में डाल दिया है।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० को इबादत का बहुत शौक था वह दिन को रोज़ा रखते और रात को क्याम करते, तिलावत करते वक्त इतना रोते कि उनकी दाढ़ी तर हो जाती। परहेज़गारी उनका वस्फ था। एक दिन आपका एक गुलाम खाने की कोई चीज़ लाया। आपने उसमें से कुछ खा लिया। लेकिन खाने के बाद गुलाम को कुछ ख्याल आया तो उसने आप से पूछाः

"आपको मालूम है आपने जो खाया है वह कहां से आया है?"

आपने फरमाया! "बताओ, कहां से आया है?"

उसने बताया "ज़माना जाहिलियत में एक शख्स ने मुझसे कुछ मन्तर पढ़वाया था। ये उसकी उजरत है।"

ये सुन कर सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने अपना हाथ मुंह में डाला और जो कुछ पेट में गया था कै के ज़रिए सब कुछ बाहर निकाल दिया।

खलीफा बनने के बाद आप लोगों के काम इसी तरह करने की

कोशिश करते थे जैसे पहले करते थे। इर्द गिर्द के कबायल की बच्चियां अपनी बकरियां उनके पास लाती थीं ताकि वह उनका दूध निकाल दें। बाद में भी ये मामूल जारी रहा।

आपने हमेशा लोगों को नेकी की तलकीन की और बुराईयों से मना किया। आपको गुस्सा बहुत कम आता था। आप अक्सर गुस्सा ज़ब्त कर जाते थे। अल्लाह तआला ने मोमिनों की तारीफ करते हुए फरमाया है:

"और अपने रब की बखशिश की तरफ और जन्नत की तरफ दौड़ जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गई है। जो लोग आसानी में और सख्ती के मौका पर अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, गुस्से पर ज़ब्त करने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले हैं, अल्लाह उन नेक लोगों से मुहब्बत करता है।"

अबू बरजह रज़ि० बयान करते हैं:

"सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० एक आदमी पर बहुत सख्त नाराज़ हुए हत्ता कि आपका रंग तबदील हो गया मैंने अर्ज़ की: रसूलुल्लाह स.अ.व. के खलीफा! अल्लाह की कसम! अगर आप मुझे हुक्म फरमाएं तो मैं उसे कत्ल कर दूं ये कहना था कि गोया आप पर ठण्डा पानी डाल दिया गया हो यानी उस आदमी के बारे में आपका गुस्सा खत्म हो गया। फिर आपने फरमाया:

"अबू बरज़ह! रसूलुल्लाह स.अ.व. के बाद इसका किसी को हक नहीं पहुंचता।"

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० ने मुखतलिफ अवकात में पांच शादियां की। आपके तीन बेटे और बेटियां थीं। अब्दुल्ला, अब्दुर्रहमान, मुहम्मद, असमा, आयशा और उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुम। अब्दुल्लाह रज़ि० ताएफ की लड़ाई के दिन ज़ख्म खाकर शहीद हो गये थे। अब्दुर्रहमान सबसे बड़े लड़के थे शोजाअत और तीर अन्दाज़ी में मारूफ थे। अस्मा बिन्त अबी बकर रज़ि० की शादी जुबैर बिन अव्वाम रज़ि० के साथ हुई, जबकि सैय्यदा आयशा उम्मुलमोमिनीन के मरतबे पर फायज़ हुयीं। नबी-ए-करीम स.अ.व. से उनकी शादी हुई। मुहम्मद बिन अबी बकर रज़ि० मिस्र में शहीद कर दिए गए। उम्मे कुलसूम रज़ि० की शादी तलहा बिन ओबैदुल्लाह रज़ि० से हुई।

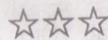
सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० अपने अहले खाना का बहुत ख्याल रखते थे। उनसे बहुत मुहब्बत करते थे। लेकिन उनसे भी ज़्यादा मुहब्बत उन्हें रसूलुल्लाह स.अ.व. से थी उनके लिए हमेशा, हर वक्त अपनी जान कुरबान करने के लिए तैयार रहते थे। नबी स.अ.व. भी उनसे वालेहाना मुहब्बत रखते थे। हर वक्त उनको साथ रखते। सहाबा-ए-किराम रज़ि० की अक्सर कोशिश यही होती थी कि आप स.अ.व. के करीब, जुड़ कर बैठें, लेकिन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की जगह हमेशा छोड़ दी जाती थी। जब वह अपनी जगह आकर बैठ जाते तो रसूलुल्लाह स.अ.व. का रूख उनकी तरफ हो जाता। आप स.अ.व. ने एक मरतबा उनके मुतअल्लिक इर्शाद किया:

"अबू बकर, मुझे तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा प्यारे हैं।"

आप स.अ.व. ने उन्हें एक से ज़्यादा मरतबा जन्नत की बशारत दी। एक दफा फरमायाः "अबू बकर हौज़े कौसर पर मेरे साथ होंगे।"

अशर-ए-मुबश्शेरा में आपका नाम सबसे पहले आता है। अशर-ए-मुबश्शेरा उन दस सहाबा किराम रज़ि० को कहते हैं जिन्हें उनकी ज़िन्दगी ही में जन्नत की बशारत दी गयी।

सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० चूंकि पढ़े लिखे शख्स थे इसी लिए कुरआन व हदीस के इल्म पर उन्हें मुकम्मल उबूर हासिल था। उनकी गुफ्तगू फसाहत व बलागत का नमूना होती थी। और उसमें सुनने वालों के लिए बड़ी नसीहत होती थी। आइए हम भी उनकी चन्द नसीहतें पढ़ें।



अमीरूल मोमिनीन सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रजि० की चन्द नसीहतें।

☆ मुसीबत की जड़ इंसान की गुफ्तगू है।

☆ अकलमन्द की पहचान यह है कि वह ज़्यादा बातें नहीं करता।

☆ सच्चाई अमानत और झूठ ख्यानत है।

☆ किसी मुसलमान को हकीर न जानो।

☆ जिस कौम में बुरी आदतें आम हो जाएं, अल्लाह उसे मुसीबत में डाल देता है।

☆ हर अच्छे काम के सवाब का एक अन्दाज़ा है लेकिन सब्र का सवाब बे अन्दाज़ा है।

☆ गुनाह से तौबा करना ज़रूरी है लेकिन गुनाह से बचना इससे भी ज़्यादा ज़रूरी है।

☆ उस दिन पर रो जो तेरी उम्र से गुज़र गया और तूने उसमें कोई नेकी नहीं की।

☆ अल्लाह तआला उस वक्त तक नफली इबादत कबूल नहीं करता जब तक कि तुम फर्ज़ अदा न करो।

☆ जो कौम जिहाद को छोड़ देती है अल्लाह उसको ज़लील कर देता है।

☆ मज़लूम की बद दुआ से बचो क्योंकि अल्लाह उसको फौरन सुन लेता है।

☆ इल्म, बगैर अमल के बेकार है।

☆ बुरों के पास बैठने से अकेले बैठे रहना अच्छा है।

☆ दवाएं खा-खा कर सेहत मन्द नहीं बना जा सकता।

☆ जिस पर नसीहत असर न करे उसका दिल ईमान से खाली है।

☆ मिसकिन और मुहताज को आजज़ी और अदब से खैरात दो, इस लिए कि खुशी से खैरात देना उसके कबूल होने की निशानी है।

☆ अल्लाह से हया करो! हर काम करते वक्त याद रखो कि अल्लाह देख रहा है।

☆ बड़ाई परहेज़गारी में है और इज़्ज़त आजज़ी में है।

☆ आपस में भाई-भाई बन कर रहो जैसा कि तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है।

☆ एक दूसरे से तअल्लुक मत तोड़ो।

☆ किसी से हसद न करो और न ही किसी के खिलाफ दिल में कीना रखो।

☆☆☆